श्रीगोरखनाथ मन्दिर में श्रीराम कथा

गोरखपुर, 27 सितम्बर। श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज की 49वीं एवं राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की चतुर्थ पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत श्रीगोरखनाथ मन्दिर में चल रही **'श्रीराम कथा'** के छठवें दिन कथा व्यास **जगदगुरु अनन्तानन्द द्वाराचार्य स्वामी डॉ0 रामकमल दास वेदान्ती जी महाराज** ने कथा के प्रारम्भ में माता सीता, भगवान राम, लक्ष्मण और चराचर जगत् मे व्याप्त प्रभु का दर्शन कराने वाले गुरु की वन्दना किया। 'श्रीरामचन्द्र् कृपालु भजु मन' राम की संगीतमयी वन्दना प्रस्तुत कर सम्पूर्ण परिपार्श्व को राममय कर दिया ।

अयोध्या काण्ड से कथा प्रारम्भ हुई। विवाहोपरान्त भगवान राम सीता के साथ अयोध्या पधारे। अयोध्या मे नित मंगल–आनन्द उत्सव होने लगे परन्तु यह भी सत्य ही कि सुख के बाद दुख का आगमन होता है। दशरथ जी ने अपना मुख दर्पण मे देखा। उनको वृद्धावस्था का आभास हुआ। गुरु वशिष्ठ, मंत्रियों की मंन्त्रणा से राम को राजा बनाने का निर्णय लिया।

महाराज जी ने कहा कि जब व्यक्ति वृद्ध हो जाये तो उसे राज्य का दायित्व पुत्र को सौंप कर भगवान का भजन करना चाहिए। दशरथ हर वह व्यक्ति है जो दस इन्द्रियों रूपी घोड़े पर सवार हो कर ईश्वर की ओर बढ़ता है। दशरथ मूर्तिमान वेद हैं उनकी तीन रानियॉ उसकी शाखाएँ हैं। कौशिल्या ज्ञानयोग, सुमित्रा भक्ति योग और कैकेयी कर्मयोग की प्रतीक हैं।

महाराज जी ने कैकेयी के उज्ज्वल चरित्र की व्यापक चर्चा करते हुए कहा कि कैकेयी को कलंकिनी के रूप जाना जाता है परन्तु कैकेयी का चरित्र भगवान राम की दृष्टि में सबसे उज्ज्वल हैं। भरत ने कैकेयी के सम्बन्ध में कहा कि कैकेयी जैसी नारी को धरती पर विधाता जन्म ही न दे। यदि जन्म दे तो उसे वन्ध्या ही रखे । भगवान राम ने कैकेयी के विषय में कहा कि जो लोग कैकेयी को दोष देते हैं उनकी बुद्धि में जड़ता हैं। उन्हें सच्चा सद्गुरु नही मिला होगा। उन्होंने सत्संग नही किया होगा। कैकेयी को जानने के लिये मति की चैतन्यता चाहिए। कैकेयी के सम्बन्ध में सुमित्रा ने कहा कि श्रेष्ठा नारी वह होती है जिसका पुत्र भगवान राम का भक्त होता हैं और भरत के समान राम का कोई भक्त नहीं है। अतः कैकेयी श्रेष्ठा नारी हैं। भरद्वाज जी के सामने जब भरत जी रोने लगे तो भरद्वाज जी ने कहा कि राम के वन गमन में कैकेयी का कोई दोष नही हैं। सच है कि उनकी बुद्धि को सरस्वती ने बदल दिया था। स्वामी तुलसीदास ने कैकेयी के कुमति की तुलना काई से की हैं। काई जिस सरोवर पर छायी रहती है वह अपने ऊपर सारी गन्दगी को लेकर पानी को दूषित होने से बचा लेती है। कैकेयी ने भी कलंक को अपने ऊपर लेकर भगवान राम के उज्ज्वल चरित्र की रक्षा की।

कथा व्यास ने राम वनवास की मार्मिक कथा सुनायी। कैकेयी ने राजा दशरथ से जो दो वरदान मॉगे उसमे पहला भरत के लिए चौदह वर्षों के लिए राजगद्दी और राम के लिए चौदह वर्षो के लिए वनवास। कैकेयी ने दशरथ से कहा कि राम तापस वेश में वनवास जायेगे और समस्त आसक्तियों का परित्याग करेंगे। कैकेयी जानती थीं कि ऐसा तपस्वी ही धरती से असुरों का नाश कर सकता हैं। कैकेयी ने लोक कल्याण के लिए इतना कठिन निर्णय लेकर राम को वनवास भेजा। महाराज जी ने कहा कि योगी आदित्यनाथ जी महाराज भी तपस्वी के रूप मे लोक कल्याण के लिए सतत् संघर्ष कर रहे है।

व्यासपीठ का पूजन अनुष्ठान के यजमानगण सपरिवार श्री अजय सिंह, कालीबाड़ी के महन्त रविन्द्रदास, भगवती जालान, अरूण कुमार अग्रवाल, अग्रवाल, महेश पोद्दार, श्री संतोष अग्रवाल, जवाहर कसौधन, श्री अवधेश सिंह, श्री चन्द्र बंसल, श्री अनिल सिंह, श्री विनोद राणा, सीताराम जायसवाल, विकास जालान इत्यादि ने किया।

महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज
लीन महन्त अवेद्यनाथ जी